वार्तालाप – 411, टी.पी.जी (आं.प्र.), ता – 3.10.07
Disc.CD-411, dated 3.10.07 at T.P.Gudem (Andhra Pradesh)

समय – 3.19
जिज्ञासू – बाबा, 84 जन्म लेने वाले कम दुःख पाते हैं क्या? माना सुख ज्यादा पाते हैं क्या?
बाबा – 84 जन्म लेने वाले सुख भी ज्यादा पाते हैं और आखरी जन्मों में दुःख भी ज्यादा पाते हैं; परंतु और धर्मों के मुकाबले उनका सुख जास्ती होता है। और दुःख जो है वो कम नहीं होता आखरी जन्म में दुःख जास्ती होता है। लेकिन टोटल अगर काउन्ट किया जाए तो उनका दुःख कम है और सुख का हिस्सा जास्ती है। तीन चौथाई जन्म उनको सुख मिलता है और अंतिम जन्मों में जाकरके उनको दुःख मिलता है। भल अंतिम जन्म में ज्यादा दुःखी हो जाते हैं। ज्यादा सतोप्रधान तो ज्यादा तमोप्रधान भी बनना पड़ता है। लेकिन सतोप्रधान जीवन ज्यादा जन्मों में भोगते हैं और तमोप्रधान जिंदगी थोड़े जन्म में भोगते हैं भल ज्यादा तमोप्रधान बन जाते हैं तो ज्यादा दुःख भोगते हैं।

Time: 3.19
Student: Baba, do those who take 84 births suffer sorrow to lesser extent? I mean to say, do they enjoy more happiness?
Baba: Those who take 84 births enjoy more happiness and also suffer more sorrow in the last births, but when compared to the other religions, they enjoy more happiness. And they do not suffer less sorrow. They suffer more sorrow in the last birth. But if you count totally, their sorrow is less and the portion of happiness is more. They get happiness for 3/4th the number of their births and they receive sorrow in the last births. Although in the last birth, they become more sorrowful. They have to become more *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) as well as more *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance). But they enjoy *satopradhan* life for more number of births and they suffer *tamopradhan* life for a few births. When they become more *tamopradhan* they suffer more sorrow.

समय – 6.00
जिज्ञासू – भक्तिमार्ग में तीन देवताओं को पुरूष रूप में दिखाया है ना। यहाँ तो दो स्त्री रूप और एक ही पुरूष रूप में दिखाया है ऐसे क्यों?
बाबा – भक्तिमार्ग में नहीं जानते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु, और शंकर जो तीन मूर्तियाँ होती हैं। वो तीन आत्माएं ऐसी हैं जिनमें वो विशेष गुण ज्यादा होता है। ब्रह्मा, माँ का विशेष गुण ज्यादा है। विष्णु, उसमें विषय–विकार ना के बराबर है। नो विष एट ऑल, विषय–विकार का नाम निशान नहीं रहता। सम्पन्न स्टेज। और शंकर, सतोप्रधान भी, तमोप्रधान भी, रजोप्रधान भी तीनों गुणों का संकर है। जो सदा शिव है वो सदैव सतो, सत–चित–आनंद कहा जाता है। वो भी उस में समाया हुआ है। सारी दुनियाँ का संघार करने वाला संघारकारी तामसी स्टेज वाला महाकाल भी उसमें समाया हुआ है और रजोप्रधान ब्रह्मा भी समाया हुआ है।

Time: 6.00
Student: In the path of worship, three deities have been shown in the male form, haven't they? Here (i.e. in the advance knowledge), two deities have been depicted in female form and only one has been shown in a male form; why is it so?
Baba: In the path of *bhakti* (devotion), they know that the three personalities Brahma, Vishnu and Shankar are three such souls in whom the following special virtue is more. Brahma has the special quality of mother more. Vishnu has negligible vices. No *vish* (poison) at all. There is no name or trace of vices. (It is) the perfect stage. And as regards Shankar, he is a hybrid of *satopradhan*, *tamopradhan* and *rajopradhan* qualities (dominated by the quality of activity or passion). The one who is *Sadaa Shiv* is always *sato* ; He is called *sat-chit-anand* (a form of truth, life and bliss). He too is present in him (Shankar). *Mahaakaal*, in a destructive, degraded

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

(tamasi) stage, who destroys the whole world, is also present in him (Shankar) and the *rajopradhan* Brahma is also present in him.

तो भक्तिमार्ग में तो ज्ञान की गहराई को जानते ही नहीं है। जो ब्रह्मा की चार भुजाएं दिखाई गई हैं। ब्रह्मा के चार–पांच मुख भी दिखाए जाते हैं। वो जानते नहीं हैं कि कोई चार–पांच मुख वाला कैसे हो सकता है। इतनी भुजाओं वाला ब्रह्मा कैसे हो सकता है। शंकर को इतनी भुजाएं नहीं दिखाते हैं। ब्रह्मा को हजारों भुजोंयें दिखा दी हैं। दिखाने वाले जानते तो है नहीं। आखिर जिन्होंने ये चित्र बनाए हैं। वो मनुष्य ही थे या ऊपर से बने बनाए चित्र उतर आए? भक्तिमार्ग के चित्र कोई मनुष्यों ने ही बनाए; परंतु बनाने वाले उनके अर्थ को नहीं जानते।
So, in the path of *bhakti*, they do not know the depth of knowledge at all. Four arms of Brahma have been depicted; four-five faces of Brahma are also depicted. They do not know, how a person can have four-five faces. How can there be a Brahma with so many arms? Shankar is not depicted to have so many arms. Brahma has been shown to have thousands of arms. Those who have depicted do not know [about it] at all. Ultimately, were those who prepared these pictures human beings or did readymade pictures come down from above? The pictures of the path of *bhakti* were prepared by the human beings themselves, but those who prepared it do not know their meanings.

सच्चाई तो बाप आकरके बताते हैं कि ब्रह्मा सहनशीलता का पार्ट है। इसलिए उसके सब सहयोगी बन जाते हैं। सबको समा लेता है। सब ब्रह्मा की गोद में पलते हैं। वो बड़ी ते बड़ी माँ का पार्ट है। सारी दुनियाँ की माँ है, सारी दुनियाँ ब्रह्मा की औलाद है। इसीलिए नाम, काम के आधार पर पड़ा है ब्रह्मा परंतु ब्रह्मा का जो रूप दिखाया जाता है भक्तिमार्ग में वो पुरूष का रूप दिखाया जाता है। वो पुरूष रूप पूजा नहीं जाता। त्रिमूर्ति शिव बाप की महिमा है। त्रिमूर्ति शिव पूजा जाता है। तो उसमें ब्रह्मा भी तो मूर्ति के रूप में समाया हुआ है। बिना ब्रह्मा की मूर्ति के त्रिमूर्ति शिव कैसे बन गया? परंतु बाबा ये आकरके रहस्य बताते हैं कि जितने भी पुरूष हैं इस दुनियाँ में सब दुर्योधन, दु:शासन हैं। इसीलिए ब्रह्मा का रूप पूजा नहीं जा सकता। कन्याओं–माताओं के द्वारा ही आकरके स्वर्ग के गेट खोलते हैं, राजधानी का उद्घाटन करते हैं।
It is the Father who comes and tells us the truth that Brahma's is a part of tolerance. That is why everyone becomes his helper. He assimilates everyone. Everyone sustains in Brahma's lap. That is the part of the senior most mother. She is the mother of the entire world; the entire world is Brahma's progeny. That is why the name 'Brahma' has been coined on the basis of the tasks performed, but the form of Brahma shown in the path of *bhakti* is of a male. That male form is not worshipped. The glory is of the Trimurty Father Shiv. Trimurty Shiv is worshipped. So, in that form, Brahma is also included as one personality. Without the personality of Brahma, how was Trimurty Shiv formed? But Baba comes and tells us the secret that all men in this world are *Duryodhans* and *Dushasans*. That is why Brahma's form cannot be worshipped. He opens the gates of heaven, inaugurates the kingdom only through the virgins and mothers *(kanya-mata)*.

भक्तिमार्ग में इन बातों को जानते ही नहीं। यहाँ भी ज्ञानमार्ग में बेसिक नॉलेज में चलने वाले जो छोटे–छोटे बच्चे हैं वो भी इस रहस्य को नहीं जानते। वो कहते हैं कि ब्रह्मा ही ब्रह्मा है, वो ही विष्णु बनता है, वो ही शंकर बनता है। तीनों ही रूप पुरूष के दिखाए दिए हैं तो भक्तिमार्ग में भी पुरूष का रूप दिखाए दिया है। लेकिन असलियत तो ये है जो सम्पन्न स्टेज में ब्रह्मा का रूप है वो पूजनीय होना चाहिए या अधुरा रूप पूजनीय होना चाहिए? सम्पन्न रूप पूजा जाता है। तो वो ही ब्रह्मा जब शरीर छोड़ने के बाद कोई माता में प्रवेश करता है। तो ब्रह्मा द्वारा नई दुनियाँ की स्थापना कही जाती है। नहीं तो दाढ़ी–मूँछ वाले ब्रह्मा के द्वारा नई

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दुनियाँ स्थापन नहीं होती। सिर्फ ब्राहमण धर्म की स्थापन होती है। इसलिए मनुष्य रूप ब्रह्मा का, पूजा नहीं जाता। पूजा तब होती है जब ब्रह्मा के रूप में चोला भी अम्मा का चाहिए। और वो माँ का चोला धारण करके नई दुनियाँ की स्थापना में विशेष सहयोगी बनता है। तब उसकी हजार भुजाएं सहयोगी के रूप में दिखने में आती है।

In the path of *bhakti* people do not know these things at all. Even here in the path of knowledge, those who follow the basic knowledge, who are the small children, they do not know this secret. They say that Brahma himself is Brahma; he himself becomes Vishnu; he himself becomes Shankar. All the three have been depicted in the male form; so, in the path of *bhakti* also, the male form has been shown. But in reality, should the complete form of Brahma be worship worthy or should the incomplete form be worship worthy? The complete form is worshipped. So, when the same Brahma, after leaving his body enters in a mother, it is said that the new world is established through Brahma. Otherwise, the new world is not established by Brahma with a beard and moustache. Only the Brahmin religion is established. That is why the human form of Brahma is not worshipped. Worship takes place when in the form of Brahma; the body should also be a mother's body. And he becomes especially helpful in the establishment of the new world by assuming the mother's body. Then his thousand arms become visible in the form of helpers.

भक्तिमार्ग के चित्रों में देवियों को भी अनेक भुजाएं दिखाई हैं। वो ही ब्रह्मा जब सम्पन्न रूप धारण करता है, विष्णु बनता है। तो प्रवृत्तिमार्ग का सम्पन्न रूप दिखाया जाता है। विराट रूप। उनको भी हजारों भुजाएं दिखाई जाती है; परंतु विराट रूप में पुरूष रूप ही दिखाया जाता है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि वास्तव में तीन मूर्तियों में जो कार्य करने वाली आत्माएं हैं। जो विष्णु रूप में भी प्रत्यक्ष होती ह, उनमें दो आत्माएं स्त्री रूपधारी है और जो आत्माएं हैं उनमें एक ब्रह्मा उर्फ कृष्ण वाली आत्मा पुरूष तो है। लम्बे समय तक पुरूष में पार्ट भी बजाती है। चोला छूटने के बाद चंद्रमा के रूप में प्रवेशता दिखाई गई है। वो भी पुरूष रूप है। और वो ज्ञान चंद्रमा जिसमें प्रवेश करता है, वो भालचंद्र या चंद्रभाल, चंद्रशेखर, वो भी पुरूष में दिखाया जाता है।

In the pictures of the path of *bhakti*, the female deities have also been shown to have many arms. When the same Brahma attains a complete form, when he becomes Vishnu, the complete form of the household path is shown, the Universal form *(Virat roop)*. He is also shown to have thousands of arms, but in the Universal form, only a male form is shown. Why is it so? It is so because actually, the souls that work in the three personalities, those souls are revealed in Vishnu's form as well, among them two souls have a female form but one among them, i.e. Brahma alias the soul of Krishna is no doubt a male, he plays a male part for a long time; after leaving his body he has been shown to be entering (Shankar) as a moon, that is also a male form and the one in whom that moon of knowledge enters, that *Bhalchandra* or *Chandrabhaal, Chandrashekhar* (titles of the deity Shankar) is shown in the form of a male as well.

इसके अलावा जो नई दुनियाँ की स्थापना में स्वर्ग का गेट खोलने के लिए विशेष निमित्त बनती है– जगदम्बा। वो भी रूद्र माला से है। रूद्र माला के सभी मणकों के स्वभाव संस्कार पुरूष रूप के हैं। इसीलिए वो भी पुरूष रूपधारी है। सिर्फ ओम राधे मम्मा जो प्रवेष करने के बाद महालक्ष्मी का रूप धारण करती है वैष्णवी के द्वारा। ये दो रूप स्त्री चोले के हैं। तो प्रधानता स्त्री चोले की जास्ती हुई या पुरूष चोले की हुई? जो भी पार्ट बजाने वाली मूर्तियाँ हैं। उन पार्ट बजाने वालों में ज्यादा रूप किसका दिखाया गया? पुरूष रूप का या स्त्री रूप का? भगवान भी पुरूष तन में आकरके प्रत्यक्ष होते हैं। स्त्री चोले के द्वारा भगवान, भगवान के रूप में प्रत्यक्ष नहीं होता। हाँ! शक्तियों को सहयोगी बनाता है। भारतमाता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। शक्तियों को आगे बढ़ा कर कार्य सम्पन्न कराता है। इसीलिए भक्तिमार्ग में भी पुरूष रूप दिखा दिया है त्रिमूर्ति का। ब्रह्मा का भी पुरूष रूप, विष्णु का भी पुरूष रूप,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और शंकर का भी पुरूष रूप। ऐसे तो भक्तिमार्ग में शंकर को अर्ध नारीश्वर भी दिखाते है। आधा स्त्री, आधा पुरूष।
Apart from this, the one who becomes especially instrumental in opening the gate of heaven in the establishment of the new world i.e. *Jagadamba*, she too is from the *Rudramala* (the rosary of *Rudra*). All the beads of the *Rudramala* have a male nature and *sanskar*. That is why she too is in a male form. Only Om Radhey Mamma, after entering (in a female body) assumes the form of *Mahalakshmi* through *Vaishnavi*. These two forms are female form. So, is there more dominance of the female body or the male body? Among the personalities that play their part (of *trimurty*), among those actors, which form has been shown more? Is it the male form or the female form? Even God is revealed in a male body when He comes. God is not revealed in the form of God through a female body. (But) Yes. He makes *shaktis* His helpers. Mother India, the Shiv Shakti incarnation – this is the slogan of the end. He makes the *shaktis* move ahead and enables the task to be accomplished by them. That is why even in the path of *bhakti* Trimurty has been shown in a male form. Brahma is in a male form; as well as Vishnu is in a male form and Shankar is also in a male form. In a way, Shankar is also shown in the form of *Ardhanareeshwar* in the path of *bhakti*, (meaning) half woman and half man.

समय –
जिज्ञासू – जो बच्चे सरेन्डर हो जाते है ना। सरेन्डर होने के बाद जो बच्चे खाते, पीते, सोते हैं। तो उसका कारण क्या है?
बाबा – बाप ने बताया है। जो समर्पित होने वाले हैं वो बाप के राजशाही परिवार के राजयोगी बनते हैं। राजयोग सीखने वाले बनते हैं। ऐसे राजयोग सीखने वाले 16108 हैं। बाकी सब हैं प्रजा। वो राजयोगियों का परिवार है। उस परिवार में महाराजाऐं भी है, महारानियाँ भी हैं, राजाएं भी हैं, रानियाँ भी हैं। राज्याधिकारी भी हैं। कोई मंत्री बनते हैं, कोई महामंत्री बनते हैं। कोई सेनानायक बनते हैं। ये सब हैं; परंतु उँच पद पाने वालों की संख्या ज्यादा होती है या सेना की संख्या ज्यादा होती है, दास–दासियों की संख्या ज्यादा होती है? दास–दासियों की संख्या ज्यादा हो जाती है। इसीलिए मुरली में बोला है कि सरेन्डर हुए और सरेन्डर होने के बाद संसार को दिखावा कर दिया कि हम समर्पित हो गए; परंतु ईश्वरीय कार्य में अपेक्षित सहयोग न दिया, खाते, पीते, सोते रहे। और फिर बाद में ये रिजल्ट निकला कि दास–दासी बन गए। लास्ट के एक दो जन्मों में जाकरके प्रिन्स–प्रिन्सेस का पद मिल गया और बाकी जन्मों में दास–दासी बनते रहे। ऐसा पद पाने वालों से तो अच्छा है कि प्रजावर्ग में साहूकार बनते रहें।
Time:
Student: What is the reason for those children who just eat, drink and sleep after surrendering?
Baba: The Father has said , those who surrender become the *Rajyogis* of the royal family of the father. They become the learners of *Rajyoga*. Those who learn *Rajyoga* are 16,108 in number. All the rest are subjects. That is a family of *Rajyogis*. In that family there are *maharajas* (emperors), *maharanis* (empress), *rajas* (kings), *ranis* (queens), officers too. Some become ministers, some become *mahamantris* (Secretary – General). Some become commanders of the army *(senanayak)*. There are all kinds; but is the number of those who attain a high post more or the number of the (people in) army more; is the number of servants and maids more? The number of servants and maids is more. That is why it has been said in the *Murli* 'if someone surrenders and after surrendering, if they show off to the world that they have surrendered, but if they didn't render the required help in the Godly task, if they continued to eat, drink and sleep , then later on a result emerged that they have become servants and maids. They attained the post of Prince-Princess in the last one or two births and if they become servants and maids in the rest of the births, then it is better to become rich persons *(sahukar)* in the subject category rather than achieving such a post'.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बड़े–बड़े साहूकार होते हैं राजाओं को कितनी मद्द करते हैं। उनके घर में ढेर दास–दासियाँ काम करती हैं। तो जन्म–जन्मांतर प्रजावर्ग में रहकर साहूकार बनना अच्छा या एक जन्म प्रिन्स–प्रिन्सेस का पद पा लिया और बाकी जन्मों में दास–दासी बनते रहें वो अच्छा। इसीलिए बोला कि 16108 की संख्या का गायन तो है; परंतु वो संगमयुग का गायन है। संगमयुग में ऐसे जो समर्पित जीवन व्यतीत करते हैं। भल खाते, पीते, सोते रहते हैं; परंतु जो अंतिम समय आवेगा तो अंजाम ये होगा की ईश्वरीय कार्य में जिन्होंने थोड़ा भी सहयोग दिया और दुनियाँ को छोड़ा तो गोप–गोपी के रूप में अतीन्द्रिय सुख जरूर पावेंगे । तो आदि के जन्म में सुखी रहेंगे अंतिम समय में। और 21वें जन्म में, 20वें जन्म में जाकर के सुखी रहेंगे प्रिन्स–प्रिन्सेस बनकर। क्योंकि 21 जन्म पूरे होने पर 16108 पदों की संख्या पूरी हो जाती है।

There are big prosperous people; they render so much help to the kings. Numerous servants and maids work in their home. So, is it better to become prosperous person while being in the subject category for many births or is it better to become Prince-Princess in one birth and become servants and maids in the rest of the births? That is why it has been said that the number 16108 is indeed praised but that is a praise of the Confluence Age. Those who lead such surrendered life in the Confluence Age, although they keep eating, drinking, sleeping, but when the last time comes, the result will be that all those who rendered even a little help in the Godly task and left the world will certainly experience super sensual joy in the form of *Gop-Gopis*. So, they will remain happy in the first birth, that is, in the end time. And in the 21st birth, 20th birth they will remain happy in the form of Prince-Princess because on the completion of 21 births, the number of 16108 is completed.

समय – 23.58

जिज्ञासू – बाबा, गोप–गोपियों के लिस्ट में माताऐं नहीं आएगी क्या?

बाबा – सन् 36 में यज्ञ शुरू हुआ। ढेर सारी कन्याऐं–माताऐं सतसंग में जाकर बैठ गई। और बाद में खेड़–बखेड़ा हुआ। तो ढेर की ढेर बंधन में आ गई। ऐसे हुआ था यज्ञ के आदि में। सब बंधन में आ गई। फिर वो बंधन अचानक कब टूट गया? 1947 में जब हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का खून खराबा हुआ। तो सात–सात तालों के अंदर जिनको बंद करके रखा गया, बंधन में डाल के। वो सब बंधन वाले पता नहीं कहाँ भाग गए, अचानक। तो जो आदि में हुआ वो अंत में भी होगा बंधन डालने वालों का पता ही नहीं चलेगा कि कहाँ उड़ गए। और जिनको निर्बंधन बनना होगा वो माताएं बच जावेंगी। और जैसे यज्ञ के आदि में कराची में पहुँच गई थी। ऐसे अंत में भी जो नई दुनियाँ का संगठन बनना है उस संगठन में जाकरके एड हो जावेंगी। तो सरेन्डर कही जावेंगी, नॉन–सरेन्डर कही जावेंगी? हं? जो बांधेली माताएं कारणे–अकारणे अभी बंधन में महसूस कर रही है और आगे चलकर ऐसा माहौल बन जावेगा कि बंधन डालने वाले फाँ हो जावेंगे। और माताएं निर्बंधन होकर बाबा के पास पहुँच जावेंगी। तो सरेन्डर मानी जावेंगी या नॉन–सरेन्डर मानी जावेंगी? लास्ट में आकर भी फास्ट जा सकती हैं।

Time: 23.58

Student: Baba, will mothers not come in the list of *Gop-Gopis*?

Baba: The *yagya* began in the year 36. A lot of virgins and mothers went and sat in the *satsang* (spiritual gathering). And later on a lot of trouble was created. So, many of them were bound by bondages. It happened like this in the beginning of the *yagya*. All of them were bound by bondage. Then, when did that bondage break suddenly? When the bloodshed of India and Pakistan took place in 1947, those who were kept in bondages with seven locks, nobody knows where all those with bondages ran away, suddenly. Therefore, whatever happened in the beginning will also happen in the end. Nobody will know as to where those who created bondages vanished? While those who have to become free from bondages, such mothers will be saved. And just as in the beginning of the *yagya* they had reached Karachi, similarly, even in the end they will be added to the gathering of the new world that is to be formed. Then, will they be

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

called surrendered or non-surrendered? Hum? The mothers with bondages who are now feeling to be in bondage due to some reason or the other, in future such an atmosphere will be made that those who created bondages will vanish and the mothers will become free from bondages and reach Baba's place. So, will they be considered to be surrendered or non-surrendered? In spite of coming in the last, they can go fast.

समय – 50.12
जिज्ञासू – बाबा, यज्ञ के आदि में पिउ की वाणी चलती थी। जिसमें सच्ची गीता का अर्थ क्लीयर बता दिया। तो बोला की आदि सो अंत। तो अंत में भी पिउ की वाणी चलेगी क्या? और चलेगी तो हम कैसे पहचानें की ये पिउ की वाणी है?
बाबा – पिउ माना होता है बाप। यज्ञ के शुरूवात भी ज्ञान बीज डाला जाता है बाप के द्वारा। तो बाप ने ही आकर गीता का रहस्य खोला था। और गीता के अर्थ बैठ समझाते थे; परंतु उस समय पूरा ज्ञान नहीं था। इसीलिए पूरा रहस्य गीता का नहीं खुला। ये वही गीता है जिसकी 108 से भी ज्यादा टीकाएं दुनियाँ में निकल चुकी हैं। व्याख्याएं। गीता के श्लोक वही हैं और अर्थ अलग–अलग अनेक प्रकार के हैं। तो अंत में भी ऐसे होगा कि गीता के श्लोकों का अर्थ ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार निकल पड़ेगा। फिर सारी दुनियाँ मानने के लिए मजबूर हो जाएगी। तो प्रत्यक्ष हो जावेगा। गीता ज्ञान दाता बाप है। बाप से जन्म लेने वाला बच्चा वो गीता ज्ञान दाता नहीं हो सकता।
Time: 50.12
Student: Baba, in the beginning of the *Yagya, Piu's vani* used to be narrated in which the true Gita was clarified. So, it has been said that whatever happens in the beginning will happen in the end. So, will the *Piu's vani* be narrated even in the end? And if it is going to be narrated then how can we realize that this is *Piu's vani*?
Baba: *Piu* means father. In the beginning of the *yagya* also, a seed of knowledge is laid through the Father. So, the Father Himself came and revealed the secrets of the Gita. And He used to explain the meanings of the Gita. But at that time there wasn't complete knowledge. That is why the complete secret of the Gita was not revealed. This is the same Gita whose more than 108 commentaries, clarifications have been released in the world. The *shlokas* (verses) of Gita are the same, whereas the meanings are different. So, even in the end it will happen that the meanings of the *shlokas* of the Gita will emerge according to the Godly knowledge. Then the entire world will be compelled to accept. Then it will be revealed that the giver of the knowledge of the Gita is the Father. The child who takes birth from the Father cannot be the giver of knowledge of the Gita.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info